IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 5, December 2025
Impact Factor: 7.67

हिन्दी साहित्य में मध्यवर्ग की दशा और दिशा

डॉ. राकेश कुमार गौतम

यमुना प्रसाद शास्त्री महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)

सारांश :

हिन्दी साहित्य में मध्यवर्ग का चित्रण स्वतंत्रता-पूर्व काल से लेकर वर्तमान वैश्वीकरण के दौर तक निरंतर बदलता रहा है। प्रेमचंद के यथार्थवादी चित्रण से लेकर मनोहर श्याम जोशी, विनोद कुमार शुक्ल, गीतांजलि श्री तक मध्यवर्ग की आकांक्षाएँ, कुंठाएँ, नैतिक पतन और नई संभावनाएँ विभिन्न रूपों में उभरकर आई हैं। यह शोध-पत्र हिन्दी उपन्यास, कहानी तथा नाटक के प्रमुख कृतियों के आधार पर मध्यवर्ग की दशा (वर्तमान स्थिति) और दिशा (भविष्य की संभावनाएँ एवं दिशा) का विश्लेषण करता है।

कीवर्ड: मध्यवर्ग, हिन्दी साहित्य, यथार्थवाद, प्रेमचंद, नई कहानी, समकालीन उपन्यास, वैश्वीकरण, नैतिक संकट

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/IJARSCT-30680